(IJRSSH) 2012, Vol. No. 2, Issue No. I, Jan-Mar **ISSN: 2249-4642**

CONCEPT OF FREEDOM IN "SHEKHAR: EK JEEVANI"

Jigyasa Shah

Research Scholar, Department of Hindi, Sardar Patel University
Vallabh Vidyanagar, Gujarat, India

'शेखर एक जीवनी' में स्वतन्त्रता की अवधारणा

जिज्ञासा शाह

शोधार्थी
हिन्दी विभाग, सरदार पटेल विश्वविधालय
वल्लभ विधानगर (गुजरात)

शेखर एक जीवनी का जीवन–दर्शन है स्वातन्त्र्य की खोज इस खोज में यद्यपि किसी न किसी सीमा तक सभी पात्र लगे हुए है। जिस समय इस उपन्यास की रचना हुई थी, उस समय देश का राजनीतिक वातावरण गांधीवाद से प्रभावित था, और गांधीजी के नेतृत्व में सभी भारतीय अपनी स्वतन्त्रता के लिए जूझ रहे थे। अनेक ऐसे नवयुवक भी थे जो तन–मन–धन से पूरी निष्ठा के साथ गांधीवादी थे। शेखर ऐसे ही नवयुवकों का प्रतीक है।

आपकी दृष्टि में संस्कृति के विकास के लिए मानसिक स्वतन्त्रता अनिवार्य है अलग सोचने की, भिन्न प्रकार से सोचने की, प्रयोग करने, भूल करके शिक्षा पाने, लीक छोडकर भटकने, शोध करने, असहमति होने, अपने क्षेत्र को प्रसृत या संकुचित करने, गहराई या ऊँचाई देने, बोलने और न बोलने की स्वाधीनता के बिना सांस्कृतिक विकास नहीं है। [1]

'शेखर एक जीवनी' के पहले भाग का प्रकाशन 1941 में हुआ ये वो दौर था जब भारतीय स्वतन्त्रता की लडाई निर्णायक मोड पर पहुँच गई थी स्वयं अज्ञेय ने भी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी के सदस्य के रूप में इस आन्दोलन में हिस्सा लिया था,

IJRSSH

गिरफ्तार हुए थे जेल गये थे चार साल के बंदी जीवन में अज्ञेय ने स्वतन्त्रता का महत्व और करीब से जाना था।

'शेखर' की भूमिका में लिखते है कि यह जेल के स्थगित जीवन में केवल एक रात में महसूस की गई धनीभूत वेदना का ही शेखर जन्मजात विद्रोही है, वो परिवार समाज व्यवस्था तथाकथित मर्यादा सबसे प्रति विद्रोह करता है वो स्वतन्त्रता का आग्रही है और व्यक्ति कि स्वतन्त्रता को उसके विकास के लिए बेहद जरूरी मानता है।

कहते है यथार्थवादी साहित्य में किसी भी पात्र का जन्म अकस्मात नहीं होता या यों कहे वो महज कोरी कल्पना नहीं होता कार्य–कारण सम्बन्धों के आधार पर ही किसी यथार्थवादी रचना में घटनाओं और पात्रों का जन्म और विकास होता है।

लेखक के अनुसार शेखर परिस्थितियों में विकसित होते हुए एक व्यक्ति का चित्र है और उस चित्र के निमित्त उन परिस्थितियों की आलोचना भी होती गई है। स्वातन्त्रय की खोज ही शेखर का जीवन दर्शन है। [2]

शेखर में व्यक्ति स्वातन्त्रय की अनुभूति और अभिव्यक्ति की जो छटपटाहट पूरे उपन्यास में नजर आती है वो दरअसल प्रेमचन्द के गोदान (1936) के पात्र 'गोबर' के चरित्र का स्वाभाविक विकास है।

शेखर भी ऐसा ही व्यक्तिवादी चरित्र है जो मन की अन्तःमन की शक्तियों से परिचालित है और अंहकार को एक सामाजिक कर्तव्य मानता है। किसी भी क्रान्ति या विद्रोह के पीछे सामाजिक–आर्थिक कारण न मानकर आंतरिक प्रेरणाओं को मानता है। वह व्यक्तिवादी जीवन दर्शन से ज्यादा प्रभावित है जिसमें यह माना जाता है कि 'मनुष्य जन्म से ही स्वतन्त्र होता है और उसकी मूल प्रवृतियां भी स्वतन्त्र होती है क्योंकि मनुष्य की स्वतन्त्रता और जीवन परिवर्तन लाने वाली शक्तियां बाहय परिस्थितियों से अप्रभाक्ति रहती है। आन्तरिक कारणों से ही उसके जीवन में परिवर्तन आता है। व्यक्तिवादी जीवन दर्शन से प्रभावित शेखर कहलाता है कि मैने अनेक ऐसे व्यक्ति देखें है, जो कहते है और समझते है कि किसी विशेष मानसिंक प्रतिक्रिया ने उन्हे क्रान्तिकारी बना दिया जैसे तिलक की अन्त्येष्टि ने या मार्शल ला के दृश्यों ने या जतीनदास की भूख हड़ताल ने। वे झूठ बोलते है या तो उन्होने गहरी आत्म विवेचना नहीं कि जिससे बाह्य कारण के पीछे अपनी सच्ची विद्रोहेच्छा को देखें या फिर उसमें इच्छा है ही नहीं, और वे विद्रोही ही नहीं है।' [3]

IJRSSH

शेखर यह भी मानता है कि एक क्रान्तिकारी या विद्रोही के मन शक्ति की धोरतम में निमंत्रण की, अथक परिश्रम की आवश्यकता है और सबसे बढकर क्रान्तिकारी के लिए क्रान्ति की अन्तशक्ति के बाद सबसे महत्वपूर्ण वस्तु है क्रान्तिकारिका के व्रिदोह भावन के प्रति एक पूजाभाव। [4]

शेखर विद्रोह को अनन्त और नित्य मानता है क्योंकि उसके उपकरणों में प्रेम के बाद सबसे बडा और सबसे अमोध अस्त्र है बौद्धिक धृणा। एक क्रान्तिकारी के लिए एक अत्यन्त करणीय पाप धृण ही है। एक क्रान्तिकारी के बनाने में प्रेम के बाद धृणा की सबसे बडी भूमिका रहती हैं शेखर मानता है कि क्रान्तिकारी की बनावट में एक विराट, व्यापक प्रेम की सामर्थ्य तो आवश्यक है ही, साथ ही उनमें एक और वस्तु नितान्त आवश्यक अनिवार्य है –धृणा की क्षमता यह कभी न मरने वाली, जला डालने वाली, घोर मारक किन्तु इतना सब होते हुए भी एक तटस्थ सात्विक धृणा की क्षमता यानी ऐसी धृणा जिसका अनुभव हम अपने सचेतन मस्तिक से करते है ? (2) शेखर : एक जीवनी प्रथम भाग – अज्ञेय पृष्ठ – 30

शेखर तात्कालीन स्वातन्त्रय आन्दोलन से और गांधीजी से काफी प्रभावित हो गया था उसने विदेशी भाषा और विदेशी परिधान का बहिष्कार कर दिया था। (सामान्यतः अज्ञेय का स्वागत 'एक अतिशय आत्म–केन्द्रित और अहं प्रमुख[5] *तथा नास्तिक बुद्धिवादी*[6] *कलाकार के रूप में हुआ।)*

शेखर रूस की विचारधारा का समर्थन तो करता है, मगर यह मानता है कि उनकी सबसे बडी गलती यह थी कि वे अपने व्यक्तित्व का ही मिटा देते थे। इसलिए शेखर उस दिन की कल्पना करता है जिस दिन हमारे देश के, हमारे संसार के क्रान्तिकारी कहलाने वाले व्यक्तियों में ऐसी प्रखर किन्तु शीतल बोद्धिक धृणा जागेगी, और वें उसमें डरेंगे नहीं उसे अपनाएँगे और उसकी प्रेरणा स्वीकार करके संसार पर अपनी छाप बिठा जाएंगे, युगान्तर कर जाएंगे और फिर भी एक नये युगान्तरकारी व्रिदोह का बीज बो जायेंगे। [7]

"दुनिया में बहुत कुछ बदलना चाहता हूं कुछ उखड पछाडकर भी पर जीवन के प्रति मेरा बुनियादी भाव आक्रोश का नहीं है ? जीवन एक विस्मयकर विभूति है और मानवीय सम्बन्ध और भी विस्मयकर।"[8]

अज्ञेय के शेखर की क्रान्तिकारिता बौद्धिक है। बौद्धिक क्रान्तिकारिता मनुष्य को राजनीतिक जीवन से विमुख करके साहित्यिक क्रान्ति की ओर ले जाती हैं। वह अब

IJRSSH

साहित्य से क्रान्ति उत्पन्न करना चाहता है,साहित्य भी वह जो व्यक्तिवादी हो और अन्त षक्ति से परिचालित हो। वह समाज से अलग और अकेला रहकर साहित्य से क्रान्ति का सृजन करना चाहता है। वह साहित्य जो क्रान्ति की प्रेरणा दें, और क्रान्ति ? एक पक्षीय नहीं, सर्वतोमुखी क्रान्ति। पता नहीं, एक पक्षीय और सर्वतोमुखी क्रान्ति कौन सी होती है ? यह तो अज्ञेय ही जाने। लेकिन यह सच है कि अज्ञेय का शेखर बिना संगठन के ही अकेला क्रान्ति करने का सिद्धान्त गढ रहा है। उसकी मान्यता है कि क्रान्ति का एक संगठित पक्ष है तो एक महानतर व्यक्ति पक्ष भी है। बिना संगठन के ही व्यक्ति अकेला भी बहुमुखी वृद्धि के बीज बो सकता है ..... और शायद जो अपनी अभिव्यक्ति के लिए साहित्य का मार्ग चुनता है, वह तो कर ही सकता है क्योंकि वह पहले व्यक्ति है, पीछे किसी संगठन का सदस्य। उसका तो विशेष धर्म है, बहुमुखी क्रान्ति के लिए भूमि जोतना और बोना क्रान्ति बीज की सिंचाई और निराई करना..... ।[9]

व्यक्तिवादी अज्ञेय की क्रान्ति का सपना देखता है। उनकी दृष्टि में व्यक्ति पहले है, समाज बाद में। इन व्यक्तिवादी मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकारों ने हिंसा और क्रान्ति को नैतिकता और आध्यामिक्ता के तर्कजाल में ऐसा उलझा दिया है न उनकी हिंसा की अवधारणा समझ में आती है और न क्रान्ति की ही। हिंसा और क्रान्ति के मनोविज्ञान ने उन्हे समाज से काटकर पलायनवादी और तटस्थवारी बना दिया।

राष्ट्रीय आन्दोलन में भी उनकी ऐसी ही भूमिका रही है राजनीति से पलायन और तटस्थता की। बाल–शेखर ने अपने बचपन में ही यह जान लिया था कि समाज ऊँच नीच दो वर्गो में विभक्त है। उच्च वर्ग वाले नीच वर्ग को हेय और तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखते है अपने पडोस में रहने वाली एक विधवा के कारण जिसकी पुत्री फूला शेखर की सहचरी थीं तब शेखर के मन मे समाज के इस विभाजन पर एक हल्का सा विद्रोह उत्पन्न हो गया था।

असहयोग की एक लहर आई जिसने समूचे देश का आप्लावित कर दिया। हर विदेशी वस्तु का बहिष्कार होने लगा। शेखर भी उससे प्रभावित हुआ उसने विदेशी वेशभूषा त्याग दी और विदेशी भाषा (अंग्रेजी) का प्रयोग बंद कर दिया। विदेशी सत्ता के प्रति उसमें इतना विद्रोह भर गया कि उसने अपने घर के सारे विदेशी वस्त्र जला डाले अंग्रेजी बोलने वाले बेरिस्टर के पुत्र को पीट दिया यद्यपि इन कार्यो के लिए उसकी भी खूब पिटाई हुई।[10]

IJRSSH

विद्रोह भावना में जितना महत्व प्रेम का है उतना ही धृणा का बौद्धिक धृणा का भी है। अतः शेखर उस दिन की कल्पना करता है जिस दिन हमारे देश के हमारे संसार के क्रान्तिकारी कहलने वाले व्यक्तियों में ऐसी प्रखर किन्तु शीतल बौद्धिक धृणा जागेगी और वे उससे डरेंगे नहीं, उसे अपनाऐंगे और उसकी प्रेरणा स्वीकार करके संसार पर अपनी छाप बिठा जायेंगे, युगान्तर कर जायेंगे और फिर भी एक नये युगान्तकारी विद्रोह का बीज बो जायेंगे, क्योंकि विद्रोह अनन्त है, नित्य है, क्योंकि उसके उपकरणों में प्रेम के बाद सबसे बडा और सबसे अमोघ अस्त्र है यही बौद्धिक घृणा।"[11]

संदर्भ ग्रन्थ

1 आत्मनेपद पृष्ठ – 97
2 आत्मनेपद, 1960 ई. पृष्ठ 67
3 शेखर : एक जीवनी प्रथम भाग – अज्ञेय पृष्ठ – 28
4 शेखर : एक जीवनी प्रथम भाग – अज्ञेय पृष्ठ – 29
5 नया इतिहास, नये प्रश्न, 1955 ई. पृष्ठ – 188
6 विचार और अनुभूति, 1965 ई. पृष्ठ – 34
7 शेखर : एक जीवनी प्रथम भाग – अज्ञेय पृष्ठ – 30
8 आत्मनेपद पृष्ठ – 187
9 शेखर : एक जीवनी प्रथम भाग – अज्ञेय पृष्ठ – 118
10शेखर एक जीवनी समीक्षा – डॉ. देशराजसिंह भाटी – पृष्ठ संख्या 220
11शेखर एक जीवनी, समीक्षा – डॉ. देशराजसिंह भाटी पृष्ठ – 51

REFERENCES

1. Atmanepad, pg-97
2. Atmanepad, 1960, pg 67
3. Shekhar: Ek Jeevani, First Part, pg 28
4. Shekhar: Ek Jeevani, First Part, pg 29
5. Naya Itihaas, Naye Prashn, 1955, pg 188
6. Vichaar aur Anubhooti, 1965, pg 34
7. Shekhar: Ek Jeevani, First Part, pg 30
8. Atmanepad, pg 187
9. Shekhar: Ek Jeevani, First Part, pg 118
10. Shekhar: Ek Jeevani, Review, Dr. Deshraj Singh Bhati, pg 220
11. Shekhar: Ek Jeevani, Review, Dr. Deshraj Singh Bhati, pg 51

IJRSSH